मन और बुद्धि

'मैं' तीन तत्त्वा से बना है–शरीर, मन तथा बुद्धि। पहला है शरीर। सब जानते है कि यह शरीर हमें माता–पिता से मिलता है। दूसरा है मन–जो दुनिया में आने के बाद हमारे घर के वातावरण व स्थिति, माता पिता के विचार व संस्कार, परिवार जन के आचरण आदि के आधार पर रूप लेता है। यह मन ही मनुष्य को विचारों में बाँधता है और अनेक दिशाओं में ले जाता है। जा मन के अधीन है वह जीवन में निरन्तर सुख दुख का अनुभव करता रहता है।

तीसरा है बुद्धि। यदि दुनिया हमें मन देती है तो अपने विचारों व साधना से हम बुद्धि को प्राप्त करते हैं। पिछले जन्मों के कर्मो का फल है बुद्धि–कर्मानुसारिणि बुद्धिः। जीवन में आने के बाद यहाँ के रीति रिवाजों को और आध्यात्मिक सत्य को समझ कर हम अशुभ कर्म छोड़ शुभ कर्म में प्रवृत्त होते हैं–इसी से हमें बुद्धि प्राप्त होती है।

बुद्धि सत्य की परछाँई है,धर्म की परछाँई है। ज्ञान की परछाँई है। इसे प्राप्त किया जाता है, न तो यह दुनिया से मिलती है, न गुरु से। प्रतिपल सोच समझ कर किए जाने वाले हमारे सत्कर्म ही हमें बुद्धि दिलाते हैं। अतः हम शुभ कर्म ही करेंगें। बुद्धि को प्राप्त कर बुद्ध हो जाएँगे।